णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

कुलक-सानुवाद सान्वय

श्रीसोमसुन्दरसूरीश्वरविरचित

श्री गुणानुराग-कुलकम्

-: आशिर्वाद :-

प.पू. सिद्धान्तदिवाकर, सुविशाल गच्छाधिपति

जयघोष सूरीश्वरजी महाराजा

GUNANURAGA-KULAKAM

Collection of Related Verses on
Appreciating the Good Qualities of Others

Prakrit verses by
Acarya Somasundara Suri

Hindi and English translations by
Manish Modi

ॐ

नमो वीतरागाय

पानी और वाणी मारते भी हैं और तारते भी हैं। एक मुख में से अन्दर जाती है, तो दूसरी मुख से बाहर निकलती है।

विशेष बात तो यह है कि अन्दर गया हुआ पानी स्वास्थ्यकारक है, और विवेक में पगी हुई वाणी स्व और पर सभी के लिए हितकारी है।

जिस प्रकार जीने के लिए पानी की आवश्यकता है, उसी प्रकार व्यावहारिक जीवन में वाणी की ज़रूरत है। दोनों में विकृति हानिकारक है।

पानी किसी प्यासे व्यक्ति का जीवन बचा सकता है, वाणी किसी का जीवन संवार सकती है, बशर्ते वह शास्त्रोक्त हो।

गुणानुराग कुलक श्री आचार्य सोमसुंदर सूरीश्वरजी द्वारा हम सभी को दी हुई शास्त्रसम्मत नसीहत है, जिसके द्वारा हम अपना जीवन संवार सकते हैं, अपना तथा अपनों का दृष्टिकोण बदलकर । आचार्य श्री सोमसुंदर सूरीश्वरजी हमें सिखलाते हैं कि वाणी की समग्र शक्ति किसी की भी निन्दा में न गंवा कर, सुयोग व्यक्तियों एवं संविग्न मुनियों के सद्गुणों की पवित्र मन से प्रशंसा करने में लगानी चाहिए ।

परनिन्दा न कि सिर्फ़ इहलोक में, बल्कि परलोक में भी दुःख का कारण बनती है ।

आचार्य सोमसुंदर सूरीश्वरजी के हृदय की विशालता की एक बानगी देखें:-

स्वगच्छ (अपनी परम्परा) अथवा परगच्छ (भिन्न परम्परा), जहाँ कहीं भी बहुश्रुत (अत्यंत विद्वान्) संविग्न (श्रमणोचित महाव्रतों का सम्यक् रूप से पालन करने वाले) मुनियों का दर्शन हो, वहाँ द्वेषभाव न रखकर, गच्छ भेद (परम्परा-भेद) आदि तुच्छ सीमाओं को लांघकर उनके सद्गुणों की सच्ची प्रशंसा करना मत भूलना । (गाथा २६)

प्रस्तुत कुलक की प्रत्येक गाथा अनूठे, अकूत एवं अभूतपूर्व रहस्यों से भरी हुई है । इनमें सद्गुणों की महत्ता एवं आवश्यकता स्पष्ट रूप से दर्शायी गयी है ।

किसी गाथा ने गुणानुराग से गुण कैसे पाना यह सिखाया है, तो किसी गाथा में परनिन्दा की निन्दा की गई है ।

आचार्य महाराज का स्पष्ट निर्देश है कि स्वयं में विद्यमान क्रोध, मान, माया, लोभ एवं ईर्ष्या आदि को नष्ट करने का सबसे अच्छा उपाय है- पर-गुण स्तुति । इससे हमारे अन्तर में विद्यमान उन्हीं सद्गुणों के अंश स्फुरायमान हो जाते हैं, हमारी दृष्टि विशाल हो जाती है एवं विचारधारा व्यक्ति के धरातल से समष्टि के आकाश पर पहुँच जाती है । एक बार दृष्टि में औदार्य आ जाए, तो फिर क्या दुर्लभ है?

यदि बहुत थोड़े में कहें, तो प्रस्तुत ग्रंथ का अभिधेय - परगुण से स्वगुण में प्रवृत्ति । परगुणों का स्वयं में निरोपण और परगुण से वस्तुस्थिति को उसकी समग्रता में और विशालता में समझने की प्रक्रिया को आत्मसात् करना ।

परमपूज्य सिद्धान्त दिवाकर, गीतार्थ मूर्धन्य, वात्सल्यमूर्ति सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य श्री जयघोषसूरीश्वरजी की सुन्दर प्रेरणा से मुझ निमित्त द्वारा इस ग्रन्थ का हिन्दी एवं अंग्रेज़ी पद्यानुवाद हुआ । वस्तुतः उनके आशीष के बिना यह सम्भव नहीं था । यह पुस्तक उनके सुझाव, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा का फल है । उन्हें शत्-शत् नमन ।

यदि मुझ निमित्त द्वारा किए गए अनुवाद में कोई भी ग़लती हो, प्रमादवश या अज्ञानवश, तो वह मेरी है । जो कुछ तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की वाणी के अनुसरण में है, सभी आचार्य श्री का है । यदि ग्रन्थ में कोई त्रुटियाँ हों, तो सुधी-पाठक संशोधित करें।

विदुषामनुचर

मनीष मोदी

विमोचन : 2012

प्रथमावृत्ति

क़ीमत : Rs. 30/-

प्रकाशक : दिव्यदर्शन ट्रस्ट
39, कलिकुंड सोसायटी
धोळका, जि. अमदावाद - 387810
www. jainonline.org

प्राप्ति स्थान : हिन्दी ग्रन्थ कार्यालय
9, हीराबाग़, सी. पी. टेंक
मुम्बई - 400 004

अक्षरजोडणी : क्रिऐटीव पेज सेटर्स
9869008907

मुद्रक : पारस प्रिन्ट्स
32, सिंघ ईन्डस्ट्रीयल एस्टेट नं.3
राम मन्दिर रोड, गोरेगांव (वेस्ट)
मुम्बई - 400 104

''सयलकल्लाणनिलयं,
नमिऊण तित्थनाहपयकमलं।
परगुणगहणसरुवं,
भणामि सोहग्गसिरिजणयं'' ॥१॥

१. जो स्वयं समस्त कल्याण के निलय हैं, ऐसे जिनेश्वरों के चरणारविन्द को नमन कर, मैं सौभाग्य का सृजन करनेवाले पर-गुण-ग्रहण के स्वरूप को बताता हूँ।

1. Worshiping the lotus-like feet of the Jinas
Who are the abode of all that is auspicious
I now state the true way of
Appreciating and imbibing good qualities from others.
This increases the possibility of attaining liberation.

''उत्तमगुणाणुराओ,
निवसई हिययम्मि जस्स पुरिसस्स।
आतित्थयरपयाओ,
न दुल्लहा तस्स रिद्धिओ'' ॥२॥

२. जिस पुरुष के हृदय में उत्तम गुणों के प्रति सच्चा अनुराग बसा है,
उसके लिए तमाम ऋद्धियाँ तो क्या, तीर्थंकर पद भी दुर्लभ नहीं!

2. All accomplishments, even becoming a Jina
Is possible for one whose heart is full of
The ability to appreciate the good qualities of others.

''ते धन्ना ते पुन्ना,
तेसु पणामो हविज्ज मह निच्चं ।
जेसिं गुणानुराओ,
अकित्तिमो होइ अणवरयं'' ॥३॥

३. जिनके हृदयकमल निरंतर ही सद्गुणों के प्रति अनुराग से प्रफुल्लित रहते हैं,
वे धन्य हैं, पुण्यवान हैं और प्रणम्य हैं।

3. I always bow in obeisance
To the blessed and meritorious ones
Who have the natural, inborn and constant ability
Of appreciating the good qualities of others.

''किं बहुणा भणिएणं,
किं वा तविएणं कि वा दाणेणं ।
इक्कं गुणानुरायं,
सिक्खह सुक्खाणं कुलभवणं'' ॥४॥

४. क्या होगा अत्यधिक पढ़ने से, तप करने से और दान से?
एक सद्गुणानुराग को हृदयंगम करने का प्रयास करो क्योंकि गुणानुराग सभी सुखों का भवन है ।

4. What is the use of excessive study, penance and benevolence?
Focus exclusively on attaining one thing:
The ability to appreciate the good qualities of others.
This ability is the abode of all happiness.

''जइ चरसि तवं विउलं,
पढसि सुयं करिसि विविहकट्ठाई ।
न धरसि गुणानुरायं,
परेसु ता निप्फलं सयलं'' ॥५॥

५. हे जीव, यदि तू गुणीजनों के सद्गुणों के प्रति सच्चा अनुराग नहीं रखता, तो..
तेरे द्वारा किये गए विपुल तप, स्वाध्याय तथा कायक्लेश निष्फल हैं ।

5. Penance, study and self-denial are fruitless,
If you lack the ability
To appreciate the good qualities of others.

''सोउणं गुणुक्करिसं,
अन्नस्स करेसि मच्छरं जइवि।
ता नूणं संसारे,
पराहवं सहसि सव्वत्थ'' ।।६।।

६. सुनकर यदि दूसरों के सद्गुणों का बखान
यदि तुझे ईर्ष्या हो जावे, तो तेरी हार पक्की है।

6. If you feel envy upon hearing
the good qualities of others,
You are certain to meet with defeat
wherever you go.

''गुणवंताणं नराणं,
इसाभरतिमिरपूरिओ भणसि ।
जई कहवि दोसलेसं,
ता भमिसि भवे अपारम्मि'' ।।७।।

७. गर ईर्ष्या है तुझमें भरी, जान लेना अवश्य अभी
परनिन्दा जो करी कभी, भटकेगा तू यहीं-यहीं।

7. O living being full of darkness and envy,
When you criticise the virtuous ones,
You are certain to wander endlessly in samsara.

''जं अब्भसेइ जीवो,
गुणं च दोसं च इत्थ जम्मम्मि।
तं परलोए पावइ,
अब्भासेणं पुणो तेणं'' ॥८॥

८. जो तू सोचेगा सदा-सदा, पावेगा भव-भव
मैं वही-वही ।
जो देखेगा सो पावेगा । गुण देखेगा गुण
पावेगा, दोष देखेगा दोष पावेगा ।

8. All the good and bad qualities that we practise in this life,
Can be attained in our next life through diligent efforts.

''जो जंपइ परदोसे,
गुणसयभरिओवि मच्छरभरेणं।
सो विउसाणमसारो,
पलालपुंजव्व पडिभाइ'' ॥९॥

९. होगे गुणों के पुंज भी, परनिन्दा जो करोगे,
तो विद्वज्जन तुमको भूसे का ढेर समझेंगे ।

9. Despite being endowed with hundreds of virtues,
One who badmouths others
Is treated like a bale of straw by the learned ones.

''जो परदोसे गिण्हइ,
संतासंतेवि दुट्ठभावेणं ।
सो अप्पाणं बंधेइ,
पावेण निरत्थएणावि'' ।।१०।।

१०. दोष मढ़ोगे जो दूसरों पर, चाहे सच्चे हों या झूठे,
बाँधोगे तुम अपने निज को, निरर्थक पापों के बोझ से ।

10. Driven by nastiness, one who derives pleasure
In revealing others' flaws,
Weighs down his soul with sinful karmas.

''तं नियमा मुत्तव्वं,
जत्तो उपज्जए कसायग्गी ।
तं वत्थु धारिज्जा,
जेणोवसमो कसायाणं'' ।।११।.

११. छोड़ो उसे जो कषाय बढ़ाए,
स्वीकारो उसे जो कषाय हरे ।

11. Necessarily give up those actions
That cause passions to rise.
And take up those which quell the passions.

''जइ इच्छह गुरुयत्तं,
तिहुयणमज्झम्मि अप्पणो नियमा।
ता सव्वपयत्तेणं,
परदोसविवज्जणं कुज्जा'' ॥१२॥

१२. जो चाहो तीन लोक में नाम गूँजे तुम्हारा, तो
परदोष न सोचना, न देखना, न कहना कभी।

12. If you truly wish to become the master of the three worlds,
Stop looking at others' flaws.

''चउहा पसंसणिज्जा,
पुरिसा सव्वुत्तमुत्तमा लोए ।
उत्तमउत्तम उत्तम,
मज्झिमभावा य सव्वेसिं'' ॥१३॥

१३. चार भाँत के लोग जगत में होते सबसे
प्रशंसित,
सर्वोत्तमोत्तम, उत्तमोत्तम, उत्तम और मध्यम ।

13. Four types of people are praiseworthy in this world:
Supremely Excellent
Excellent
Good
Average

''जे अहमअहम अहमा,
गुरुकम्मा धम्मवज्जिया लोए।
ते वि य न निंदणिज्जा,
किंतु दया तेसु कायव्वा'' ॥१४॥

१४. और बचें जो सारे जग में, हों वे अधम या अधमाधम, कर्मों से भ्रमित या धर्म से रहित, निन्दा उनकी कभी मत करना दयाभाव तुम उनपर रखना।

14. Do not berate or criticise even those
Who are heavily engulfed in karmas and bereft of piety:
Depraved and Supremely Depraved.
Treat them with compassion.

''पच्चंगुब्भडजुव्वणवंतीणं,
सुरहिसारदेहाणं ।
जुवईणं मज्झगओ,
सव्वुत्तमरुववंतीणं'' ॥१५॥

सर्वोत्तमोत्तम पुरुष

१५,१६. नवयौवन हो, सुगन्धित तन हो, खिला चहकता जो चितवन हो
ऐसी नारियों के बीच रहकर भी ...

Conduct of the Supremely Excellent Ones

15, 16. Despite living amongst the most beautiful women,
Bursting with youth, beauty and fragrance…
One who is celibate from birth

''आजम्मबंभयारी,
मणवयणकाएहिं जो धरइ सीलं ।
सव्वुत्तमुत्तमो पुण,
सो पुरिसो सव्वनमणिज्जो'' ॥१६॥

...जो तनिक भी विचलित ना होता हो
तीन करण से जो पाले है शीलव्रत
वही पुरुष सर्वोत्तमोत्तम है ।

''एवंविहजुवइगओ,
जो रागी हुज्ज कहवि इगसमयं ।
बीयसमयम्मि निंदइ,
तं पावं सव्वभावेणं'' ॥१७॥

उत्तमोत्तम पुरुष

१७,१८. अत्यंत सुन्दर स्त्रियों के बीच रहकर भी
जिसके,
मन में पलभर भी जो विकार आवे तुरत पछता
कर उसे हटावे ।

And follows the vow of celibacy through mind, speech and body,
Is Supremely Excellent and deserves universal praise.

Conduct of the Excellent Ones

17, 18. He may be momentarily affected by feelings of attachment
Upon seeing the most gorgeous women,
But recovers the very next moment
And criticises his transgression from the bottom of his heart.

''जम्मम्मि तम्मि न पुणो,
हविज्ज रागो मणम्मि जस्स कया।
सो होइ उत्तमोत्तम-
रुवो पुरिसो महासत्तो'' ॥१८॥

प्रायश्चित्त की गंगा में नहावे और फिर
सावधान निर्विकार हो जावे
वह मानुस उत्तमोत्तम कहलावे।

He shall bathe in the river of atonement,
And shall never again allow his mind to be attracted.
Such a person is Excellent.

''पिच्छइ जुवइरुवं,
मणसा चिंतेइ अहव खणमेगं ।
जो न चरइ अकज्जं,
पत्थिज्जंतो वि इत्थिहिं'' ॥१९॥

उत्तम पुरुष

१९. जो युवती के रूप को निरखे हिय में अपने
राग ले आवे लेकिन मौका पाकर भी वह कभी
न खोटा काम करे
सो मानुस उत्तम कहलावे।

Conduct of the Good

19. He may gaze at young women,
And even feel momentary attraction.
But does not indulge in immoral conduct,
Even when the opportunity presents itself.

''साहु वा सड्ढो वा,
सदारसंतोससायरो हुज्जा ।
सो उत्तमो मणुस्सो,
नायव्वो थोवसंसारो'' ॥२०॥

उत्तम पुरुष

२०. जोगी हो, साधक हो, दुनियादारी से जुदा हो,
भक्त हो, गृहस्थ हो, दुनियादारी में फँसा हो,
जो भी श्रावक स्वदारसंतोष में आस्था रखे
सो उत्तम है,
और उसका अल्प संसार शेष है ।

20. A monk,
Or a layman completely faithful towards his spouse,
Both are good persons and shall wander in samsara for only a short while.
NB Jain ascetics practise complete and absolute chastity. Laypersons do not. But a layman who is completely faithful to his spouse also deserves to be held in esteem.

''पुरिसत्थेसु पवट्टइ,
जो पुरिसो धम्म-अत्थपमुहेसु ।
अनुन्नमनाबाहं,
मज्झिमरुवो हवइ एसो'' ॥२१॥

मध्यम पुरुष

२१. धर्म, अर्थ, काम जो सेवे, सतत मोक्ष की
भावना भाये
सो मानव मध्यम कहलाये ।

Conduct of the Average
21. One who makes unceasing efforts in the four fields of endeavour,
Dharma {piety}, Artha {profit}, Kama {pleasure} and Moksha {liberation},
Is the Average person.

''एएसिं पुरिसाणं
जइ गुणगहणं करेसि बहुमाणा ।
ता आसन्नसिवसुहो,
होसि तुमं नत्थि संदेहो'' ॥२२॥

२२. इन पुरुषों से जो सादर गुणग्रहण का भाव रखेगा
सो मानव बहुत जल्द ही शिव सुख को पायेगा ।

22. If you make efforts to respectfully appreciate the good qualities of such persons,
(The Supremely Excellent, the Excellent, the Good and the Average),
Then you shall doubtlessly attain the bliss of liberation very soon.

''पासत्थाइसु अहुणा,
संजमसिढिलेसु मुक्कजोगेसु ।
नो गरिहा कायव्वा,
नेव पसंसा सहामज्झे'' ॥२३॥

२३. कोई साधु असंयमी हो, या फिर स्वच्छंद हो तो भी,
कभी न उसकी निन्दा करना. ना ही सभा में गुण गाना ।

23. You should not criticise or excoriate those monks,
Who are lax in self-control and unrestrained in conduct.
Nor should you praise them in public.

''काऊण तेसु करुणं,
जइ मन्नइ तो पयासए मग्गं ।
अह रुसइ तो नियमा,
न तेसिं दोसं पयासए'' ॥२४॥

२४. ऐसे साधु पर करुणा रखना, माने तो सन्मार्ग पर लाना,
न माने तो निन्दा मत करना ।

24. If monks with lax conduct are willing to listen you, Show them the right path.
Else, if the mere mention of the right path angers them, Do not pronounce their faults. show compassion.

''संपइ दुसमसमए,
दीसइ थोवो वि जस्स धम्मगुणो ।
बहुमाणो कायव्वो,
तस्स सया धम्मबुद्धिए'' ॥२५॥

२५. आज के दुष्कर जीवन में जहाँ धर्म की किरण दिखे
वहीं उसका बहुमान करो ।

25. In this difficult world, wherever you find even a little goodness, Treat it with great respect and look upon it with a positive attitude.

''जउ परगच्छि सगच्छे,
जे संविग्गा बहुस्सुया मुणिणो ।
तेसिं गुणानुरायं,
मा मुंचसु मच्छरपहओ'' ॥२६॥

२६. साधु चाहे अपने संघ का हो या हो दूसरे संघ का,
जहाँ भी दिखे उत्तम साधु गुणानुवाद से मत चूकना ।

26. Whether they belong to your gaccha {ascetic lineage} or another,
Never let envy stop you from appreciating the good qualities of monks
Who are highly learned and fearful of samsara.

''गुणरयणमंडियाणं,
बहुमाणं जो करेइ सुद्धमणो ।
सुलहा अन्नभवम्मि य,
तस्स गुणा हुंति नियमेणं'' ॥२७॥

२७. जो हो स्वच्छ चित्त वाला, गुणीजनों का बहुमान करे,
सो पावेगा उनके वे गुण परभव में, यह निश्चित है ।

27. It is certain,
That one who most sincerely admires the good qualities of others,
Who are studded with the gems of good qualities,
Shall attain their qualities in the next birth.

''एयं गुणानुरायं,
सम्मं जो धरइ धरणिमज्झम्मि ।
सिरिसोमसुंदरपयं,
सो पावइ सव्वनमणिज्जं'' ।।२८।।

२८. जौ धारण करैं गुणानुराग,
सौ पावैं मौक्षफल बड़भाग ।

28. Anyone on earth who follows the habit
Of truly appreciating the good qualities of others,
Shall be worshiped by all
And shall attain the somasundara
{luminous and beautiful}
State of Liberation.

17